Toppersnotes
Unleash the topper in you

राजस्थान हाई कोर्ट

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

jktLFkku dh dyk] lLdfr
,o Hkkxkfyd fLFkfr

SIERRA INNOVATIONS
Private Limited

राजस्थान का भूगोल

1. राजस्थान की उत्पत्ति, स्थिति व विस्तार 156

2. राजस्थान के ऐतिहासिक व भौगोलिक स्थानो की वर्तमान स्थिति 164

3. राजस्थान के भौतिक प्रदेश व विभाग 168

4. राजस्थान की जलवाय 188

5. राजस्थान मे मृदा संसाधन 197

6. राजस्थान मे वन-संसाधन व वनस्पति 201

7. राजस्थान मे खनिज सम्पदा 207

8. ऊर्जा के स्त्रोत 216

9. राजस्थान मे पशुधन 221

10. राजस्थान मे कृषि 228

11. राजस्थान की जनसंख्या 234

12. राजस्थान मे वन्य जीव व इनका संरक्षण 239

13. राजस्थान की जलविद्युत परियोजनाएं 246

14. राजस्थान गैस, परमाण व तरल ईंधन आधारित योजनाएं 251

15. अपवाह तंत्र 255

16. राजस्थान की झीले 268

17. सिंचाई परियोजना 273

राजस्थान की कला एवं संस्कृति

1. राजस्थान के त्यौहार 1

2. राजस्थान के लोक देवता 15

3. राजस्थान की लोक देवियां 23

4. राजस्थान के लोक संत 31

5. राजस्थान के लोक गीत 37

6. राजस्थान के संगीत घराने 42

7. राजस्थान के लोक नृत्य 44

8. राजस्थान के लोक नाट्य 52

9. राजस्थान की प्रमुख बोलियां 58

10. महत्वपूर्ण किले एवं स्मारक 62

11. जिले व धार्मिक स्थल 80

12. राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व 88

13. महिला व्यक्तित्व 95

14. आभूषण एवं वेशभूषा 98

15. राजस्थान का साहित्य व साहित्यकार 103

16. राजस्थानी कहावतें व लोकोक्तियां 108

राजस्थान की कला एवं संस्कृति

राजस्थान के त्यौहार

विक्रमी संवत् के महिने : (चन्द्रमा आधारित)

(1) चैत्र	(2) वैशाख
(3) ज्येष्ठ	(4) आषाढ
(5) श्रावण	(6) भाद्रपद
(7) आश्विन	(8) कार्तिक
(9) मार्गशीर्ष	(10) पौष
(11) माघ	(12) फाल्गुन

– सूर्य आधारित कैलेण्डर से बराबर करने के लिए प्रत्येक तीसरे वर्ष विक्रमी संवत् में एक (1) अतिरिक्त महिना जोड दिया जाता है इसे अधिकमास कहा जाता है ।

चन्द्रमा आधारित $29\frac{1}{2} \times 12 = 355$

$= 365 + 10\ days\ (1\ year)$

पौष – माघ – जनवरी

माघ – फाल्गुन – फरवरी

फाल्गुन – चैत्र – मार्च

चैत्र – वैशाख – अप्रैल

वैशाख – ज्येष्ठ – मई

ज्येष्ठ – आषाढ – जून

आषाढ – श्रावण – जुलाई

श्रावण – भाद्रपद – अगस्त

भाद्रपद – आश्विन – सितम्बर

आश्विन – कार्तिक – अक्टूबर

कार्तिक – मार्गशीर्ष – नवम्बर

मार्गशीर्ष – पौष – दिसम्बर

''तीज त्यौहारा बावडी ले डूबी गणगौर''

हिन्दु त्यौहार श्रावण शुक्ल तृतीय अर्थात् (छोटी तीज) से शुरू होकर चैत्र शुक्ल तृतीय (गणगौर) पर समाप्त हो जाते है ।

1. श्रावण

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
पंचमी – नाग पंचमी	तृतीयाः – छोटी तीज
नवमी – निडरी नवमी (नेवले की पूजा)	जयपुर में छोटी तीज की सवारी प्रसिद्ध है
अमावस्याः हरयाली अमावस्या मेलेः 1. कल्पवृक्ष – मांगलियावास (अजमेर) 2. फतेह सागर झील मेला (उदयपुर) 3. बुढा जोहड मेला (श्री गंगानगर)	– यह पति – पत्नी के प्रेम का त्यौहार है । – यह प्रकृति – प्रेम का त्यौहार है । – इसमें महिलाएँ ''लहरिया'' ओढनी ओढती है । – सिंजाराः नवविवाहिता के लिए ससुराल पक्ष से आने वाले उपहार पूर्णिमाः रक्षाबन्धन (नारियल पूर्णिमा) इस दिन ''श्रवणकुमार'' की पूजा की जाती है ।

भाद्रपद (सबसे ज्यादा त्यौहार)

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
तृतीया : बडी तीज बूढी तीज सातुडी तीज कजली तीज – बूँदी में बडी तीज की सवारी प्रसिद्ध है ।	द्वितीया – ''बाबे री बीज'' (रामदेव जयन्ती) – रूणीचा (रामदेवरा) में रामदेवजी का मेला लगता है जो द्वितीया से लेकर ग्यारस तक चलता है । – इस मेलें को ''मारवाड का कुम्भ'' कहा जाता है ।
षष्ठी (छठ) : अब छठ (लडकी पूरे दिन खडी रहती है अच्छे वर के लिए व्रत करती है ।)	चतुर्थी : (चौथ) – गणेश चतुर्थी – शिव चतुर्थी – कलंक चतुर्थी – चतरा चौथ
अष्ठमीः कृष्ण जन्माष्टमी	मेलेः 1. त्रिनेत्र गणेश मेला – रणथम्भौर 2. 'चुंगी तीर्थ मेला' – जैसलमेर (गणेश जी का मेला)
नवमीः गोगानवमी	

इस दिन किसान "हल" को 9 गाँठ वाली राखी बाँधता है । मेले: 1. ददरेवा (चुरू) 2. गोगामेढी (हनुमानगढ)	पंचमी: ऋषि पंचमी सप्त ऋषि की पूजा की जाती है । 'माहेश्वरी समाज का रक्षाबन्धन' मेले: 1. भोजन थाली मेला–कामा भरतपुर 2. हरिराम जी का मेला –झोरडा नागौर (साँप से बचाते है ।)
द्वादशी/बारस: बछबारस (इस दिन खाबूत अनाज का प्रयाग होता है, चाकू का प्रयाग नही होता) अमावस्या : सती अमावस्या झुन्झुनु में मेला लगता है । (3,6,9,12,15)	अष्टमी: राधाष्टमी – सलेमाबाद (अजमेर) में निम्बार्क सम्प्रदाय का मेला होता है । इस सम्प्रदाय के लोग राधा को कृष्ण की पत्नी मानते है । दसमी – तेजादसमी परबतसर (नागौर) में पशु मेला एकादशी – जलझूलनी/देवझूलनी एकादशी (इस दिन भगवान कृष्ण को नहलाया जाता है) चतुर्दशी: अनन्त चतुर्दशी (इस दिन गणेश विसर्जन किया जाता है ।) पूर्णिमा : श्राद्ध प्रारम्भ

3. अश्विन

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
श्राद्ध पक्ष (16 दिन) (कोई मंगल काम नहीं होता है 16 दिन) – सांझी की पूजा की जाती है ।	एकम : शरद नवरात्र प्रारम्भ अष्टमी : दुर्गाष्टमी होमाष्टमी

गोबर और मिट्टी की गोल आकृति की पूजा की जाती है । – उदयपुर के मत्स्येन्द्र नाथ मन्दिर को खाँझी का मन्दिर कहा जाता है । नाथद्वारा में केले की खाँझी बनाई जाती है । श्राद्ध पक्ष के अन्तिम दिन ''थम्बुडा व्रत'' किया जाता है ।	दशमी : विजयादशमी – कोटा राजस्थान मैसूर (कर्नाटक) के दशहरे प्रसिद्ध है । – हथियारों की पूजा की जाती है । – खेजडी की पूजा की जाती है । 5 जून 1988 को खेजडी पर डाक टिकट जारी हुआ था, राजस्थान का ऐसा पेड जिसकी हर चीज उपयोगी होती है । इस दिन ''लीलटांस'' को देखना शुभ माना जाता है । कन्हैया लाल सेठिया ने लीलटांस नामक कविता लिखी । पूर्णिमा : (शरद पूर्णिमा, रास पूर्णिमा) – मारवाड महोत्सव / मांड महोत्सव (जोधपुर) – मीरा महोत्सव – चित्तौड

4- कार्तिक

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
चतुर्थी : करवा चौथ अष्टमी: अहोई अष्टमी (सन्तान की लम्बी उम्र की कामना के लिए व्रत) त्रयोदशी: धनतेरस ''धनवन्तरि जयन्ती''	एकम् : – गोवर्धन पूजा – नाथद्वारा में इस दिन अन्नकूट महोत्सव मनाया जाता है तथा भील जनजाति बडी संख्या में भाग लेती है । द्वितीया: भैया दूज / यम द्वितीया अष्टमी: गोपाष्टमी

(धनवन्तरि भारत के बहुत बडे डॉ. थे ।) चतुर्दशी : रूप चतुर्दशी अमावस्या : दीपावली – भगवान महावीर का निर्वाण दिवस – दयानन्द सरस्वती	नवमी: आंवला नवमी/अक्षय नवमी आंवला अक्षय (कभी खराब नहीं होता है ।) (दिपावली के 9 दिन बाद आंवले खाते है) एकादशी: देवउठनी एकादशी ''प्रबोधिनी एकादशी'' – इस दिन ''पुष्कर मेला'' प्रारम्भ होता है । पूर्णिमा: – सत्यनारायण पूर्णिमा – इस दिन कार्तिक स्नान होता है । मेले: – पुष्कर मेला – कोलायत मेला (बीकानेर) – चन्द्रभागा मेला (झालरापाटन) – रामेश्वरम् मेला (सवाई माधोपुर) (चन्द्रभागा मेला में मालवी नस्ल के पशुओं का क्रय-विक्रय किया जाता है ।) मालवी नस्ल: एम.पी. मालवा पशु होने के कारण – (कोलायत में कपिल मुनि रहते थे जिन्होंने सांख्य दर्शन दिया था ।)
5. मार्गशीर्ष	कोई त्यौहार नही
6- पोष	कोई त्यौहार नहीं

7- माघ

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
चतुर्थी: तिल चतुर्थी संकटहरण चतुर्थी मेला: चौथ का बरवाडा (रा. माधोपुर) एकादशी: षट्तिला एकादशी (6 प्रकार के तिल का दान) अमावस्या: मौनी अमावस्या (इस दिन मौन रहा जाता है ।) – इस दिन ''कुंभ मेले का शाही स्नान'' होता है ।	एकम् : गुप्त नवरात्र प्रारम्भ पंचमी : बसन्त पंचमी (सरस्वती पूजा की जाती है) – इस दिन गार्गी पुरस्कार दिया जाता है । पूर्णिमा: ''नवाटापरा गाँव'' (डूँगरपुर) में ''वेणेश्वर मेला'' भरता है । (एक मन्दिर का नाम) – यहाँ पर सोम माही जाखम नदियाँ आकर मिलती है । – यहाँ पर खण्डित शिवलिंग की पूजा की जाती है । – वेणेश्वर को ''आदिवासियों का कुम्भ'' तथा ''वागड का पुष्कर'' कहा जाता है ।

8. फाल्गुन

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
त्रयोदशी – महाशिवरात्रि – शिवाड (सवाई माधोपुर) में ''घुश्मेश्वर महादेव जी का मेला'' भरता है ।	द्वितीया: फुलेरा दूज (शादी के साथे) पूर्णिमा : होली – भिनाय (अजमेर) – कोडामार होली – महावीर जी (करौली) – लठमार होली – बाडमेर – पत्थरमार होली (भिनाय में राजस्थान की पहली सहकारी समिति (1904) में बनाई थी ।) – इस दिन इलोजी (होलिका का पति) की बारात निकाली जाती है । (बाडमेर में) (इलोजी : मारवाड में ''छोडछाड का देवता''

	कहते हैं ।) – इस दिन ब्यावर (अजमेर) में ''बादशाह'' की सवारी निकाली जाती है । – इस दिन टोडरमल बादशाह होता है । – सांगोद (कोटा) – ''न्हाण की झाँकिया'' निकलती है । – जयपुर में ''जन्म–मरण–परण'' का त्यौहार होता है ।

9. चैत्र

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
एकम् : धुलण्डी	एकम् : विक्रमी नव वर्ष प्रारम्भ (हिन्दुओं का नव वर्ष) – 1956 (विक्रमी संवत्) में अकाल (छपनियाँ अकाल) पडा था । 1956 विक्रमी संवत् – 1899 ई. सन्
अष्टमी : शीतला अष्टमी (बास्योडा) इस दिन चाकसू (जयपुर) में ''गधों का मेला'' लगता है । शीतला माता का वाहन	तृतीयाः गणगौर – जयपुर व उदयपुर को गणगौर की सवारी प्रसिद्ध है ।
अष्टमी / नवमी: ऋषभदेव मेला – धुलेव (उदयपुर) जैनो के प्रथम भगवान (आदिनाथ)	– जेम्स टॉड ने उदयपुर की गणगौर का वर्णन किया है ।
भील जनजाति इन्हे केसरिया नाथ जी या कालाजी के रूप में पूजती है ।	– नाथद्वारा में इसे ''गुलाबी गणगौर'' या चुनडी गणगौर कहा जाता है । (इस दिन भगवान कृष्ण को गुलाबी चुनडी पहनाई जाती है ।)
एकादशी: जौहर मेला (चित्तौडगढ) (होली के 11 दिन बाद)	– यह (गणगौर) सर्वाधिक लोकगीतों का त्यौहार है । – इन दिन लडकियाँ अपने लिए अच्छे पति तथा अपने भाई के लिए अच्छी पत्नी के लिए व्रत करती है । – जैसलमेर में ''गणगौर'' ''चतुर्थी'' को मनाई जाती है ।
	नवमी: राम नवमी

	पूर्णिमा : हनुमान जयन्ती मेले: – सालासर (चुरू) (दाढी मुँछ वाले बालाजी) – मेहंदीपुर बालाजी (दौसा) (बालाजी दक्षिण में विष्णु भगवान को कहा जाता है ।)

10. वैशाख

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
तृतीया : धींगा गवर जोधपुर में धींग गवर मेला होता है (धींगा = जबरदस्ती)	तृतीया: अक्षय तृतीया इस दिन राजस्थान में सर्वाधिक बालविवाह होते है । (बीकानेर का स्थापना दिवस) विक्रम संवत् = 1547
	पूर्णिमा: – बुद्ध पूर्णिमा – पीपल पूर्णिमा (भगवान बुद्ध को पीपल के नीचे ज्ञान मिला था ।) मेले: 1. बाणगंगा मेला (विराटनगर जयपुर) 2. गोमतीसागर मेला (झालरापाटन) मालवी नरेश के पशुओं का क्रय-विक्रय 3. नक्की झील मेला – माउण्ट आबू 4. मातृकुण्डिया मेला – चित्तौड 5. गोतमेश्वर मेला – अरगोद (प्रतापगढ) – इस दिन पोकरण में परमाणु परीक्षण किया गया था ।

11. ज्येष्ठ

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष

अमावस्या: बड़मावस (वट वृक्ष अमावस्या)	दशमी: गंगा दशमी – कांमा (भरतपुर) में गंगा दशमी मेला होता है । एकादशी: निर्जला एकादशी – इस दिन उदयपुर में पतंगे उड़ाई जाती है ।

12. आषाढ

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
	एकम् : गुप्त नवरात्रा प्रारम्भ नवमी : भड़ल्या नवमी एकादशी : देवशयनी एकादशी पूर्णिमा : गुरू पूर्णिमा व्यास पूर्णिमा (वेद व्यास महाभारत के रचयिता का जन्मदिन)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

धर्म	यहुदी	ईसाई	इस्लाम
ईश्वर	मोजेस	जीसस	मोहम्मद साहब
पवित्र किताब	ओल्ड टेस्टामेट	बाईबल	कुरान
शुभ दिन	शनिवार	रविवार	शुक्रवार

मुस्लिम त्यौहार

पैगम्बर मोहम्मद साहब का जन्म ''570 ई.'' में ''मक्का (स. अरब)'' में हुआ था । 622 ई. में मोहम्मद साहब मक्का छोडकर मदीना चले गये थे । इस घटना को ''हिजरत'' (अरबी में) कहा जाता है तथा इस दिन से हिजरी सम्वत् (हिजरी कैलेण्डर) की शुरूआत होती है ।

– यह चन्द्रमा आधारित कैलेण्डर होात है लेकिन आधिकमास नहीं जोडा जाता 632 ई. में मदीना में ही मोहम्मद साहब की मृत्यु हो गई थी ।

महिनों का नामः

1. मोहर्रम
2. सफर/सिफर
3. रबी–उल–अव्वल
4. रबी–उस–मानी
5. जमात–उल–अव्वल
6. जमात–उस–सानी
7. रज्जाब
8. शाबान
9. रमजान
10. शव्वाल
11. जिल्काद
12. जिल्हिज

(इनमें केवल तारीख होती है ।)

1. मोहर्रम :

10 तारीखः

– मोहम्मद साहब का ''दोहिता हसैन'' अपने 72 साथियों के साथ कर्वला के मैदान (ईराक) में लडता हुआ मारा गया था । उसकी याद में इस दिन ''ताजिये'' निकाले जाते है ।

27 तारीखः

– ''गलियाकोट'' (डूँगरपुर) में सैययद फखरूद्दीन का उर्स

यह दाउदी बोहरा सम्प्रदाय का प्रमुख स्थान है ।

2. सफर :

20 तारीख चेहल्लम – हुसैन के मरने के चालीस दिन पूरे हुये थे ।

3. रबी–उल–अव्वल :

12 तारीख

ईद – मिलादुल नबी (मोहम्मद साहब का जन्म)

बारावफात (मोहम्मद साहब की मृत्यु)

4. रबी-उस-सानी : ×

5. जमात - उल - अव्वल : ×

6. जमात - उस - सानी :

8 तारीखः फारस (ईरान) के संजरी गाँव में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का जन्म

7. रजबः

1-6 तारीख : ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का "अजमेर में उर्स" भीलवाडा का गौरी परिवार झण्डा चढाकर उर्स की शुरूवात करता है ।

27 तारीख : मेराज की रात

(इस रात को मोहम्मद साहब की खुदा से मुलाकात हुई थी)

(8) शाबानः

14 तारीख

शबेरात

- इस रात मुसलमान मक्का की हीरा पहाडी पर इकट्ठे होते हैं तथा अपने पापों का प्रायश्चित करते हैं ।

1. रमजानः

मुसलमानों का सबसे पवित्र महीना
इस महीनें में रोजे रखें जाते हैं ।

27 तारीखः शबेकद्र (इस दिन कुरान लिखी गई थी)

2. शव्वाल :

1 तारीख ईद-उल-फितर (मीठी ईद)

(सिवैयों की ईद)

(भाईचारे का त्यौहार)

3. जिल्काद:

4. डिल्हिज :

इस महिने में मुसलमान हज यात्रा के लिए जाते हैं (8,9,10 तारीख)

10 तारीख : ईद-उल-जुहा (बकर ईद)

(कुर्बानी का त्यौहार)

जैन के त्यौहार

ऋषभ जयन्ती – चैत्र कृष्ण नवमी

महावीर जयन्ती – चैत्र शुक्ल त्रयोदशी

दसलक्षण पर्व → चैत्र
→ भाद्रपदशुक्ल पंचमी से चतुर्दशी तक
→ माघ

भाद्रपद के दसलक्षण पर्व को "पर्यूषण पर्व" कहा जाता है ।

(महा पर्व)

जैन

अनुव्रत (गृहस्थी वाले) | महाव्रत (साधु-महात्मा)

पर्यूषण

दिगम्बर

पर्यूषण : भाद्रपद शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी

आश्विन कृष्ण एकम् – पडवा ढोक

(क्षमा याचना पर्व)

श्वेताम्बर

पर्यूषण – भाद्रपद कृष्ण द्वादशी – शुक्लचतुर्थ

भाद्रपद शुक्ल पंचमी – संवत्सरी पर्व

या

क्षमा याचना पर्व

रोट तीज :	भाद्रपद शुक्ल तृतीया
सुगन्ध दसमी/धूप दसमी :	भाद्रपद शुक्ल दसमी

सिक्खों के त्यौहार

गुरू नानक जयन्ती	कार्तिक पूर्णिमा
(सिक्खों के प्रथम भगवान)	मेले: कोलायत (बीकानेर)
	साहबा (चुरू)
गुरू गोविन्द सिंह जयन्ती:	पौष शुक्ल सप्तमी
सिक्खों के 10 वे भगवान	
लोहडी	13 जनवरी
वैशाखी	13 अप्रैल

13 अप्रैल 1699 को गुरू गोविन्द सिंह ने आनन्दपुर साहिब में "खालसा पंथ" की स्थापना की थी ।

नोट:

13 अप्रैल 1919 – जलियावाला हत्याकाण्ड

सिन्धीयों के त्यौहार

1. चेटीचण्ड/झूलेलाल जयन्ती (झूलेलाल को वरूण का अवतार मना जाता है)	चैत्र शुक्ल एकम्
2. थदडी सातम:	भाद्रपद कृष्ण सप्तमी (जन्माष्टमी से 1 दिन पहले)

ईसाईयों के त्यौहार

गुड फ्राइडे : इस दिन ईसा मसीह को फांसी पर चढाया गया था ।

गुड फ्राइडे :- ईस्टर से ठीक पहला फ्राइडे होता है ।

ईस्टर : इस दिन ईसा मसीह पुर्नजीवित हुये थे । यह रविवार का दिन था । 2 मार्च से 22 अप्रैल के बीच जो पूर्णिमा आती है उसके ठीक बाद वाला रविवार, ईस्टर होता है ।

असंन्शन डे : ईस्टर के 40 दिन बाद आता है । इस दिन ईसा मसीह वापस स्वर्गलोक चले गये थें ।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

राजस्थान के लोक देवता

पाबू हडबू रामदे, मांगलिया मेहा । पाँचू पीर पधारज्यों, गोगाजी जेहा ॥

पाबू हडबू रामदेवजी, मेहाजी, गोगाजी : ये 5 पीर हैं ।

जिन्हे हिन्दु व मुसलमानों दोनों मानते हैं ।

1. पाबू: (पाबूजी राठौड)

जन्म स्थान : कोलूमण्ड (जोधपुर)

पिता : धाँधल

माता : कमला दे

पत्नी : फूलमदे/सुप्यार दे (अमरकोट की राजकुमारी)

पाबूजी की घोडी : ''केसर कालमी''

– देवल नामक चारण महिला की गायों की रक्षा के लिए अपने फेरों के बीच से उठकर आ गये थे तथा ''देचू गाँव (जोधपुर)'' में ''जींदराव खींची'' के खिलाफ लडते हुये मारे गये थे ।

– पाबूजी को ''लक्ष्मण का अवतार'' माना जाता हैं ।

– चाँदा व डामा नामक 2 भील भाई इनके सहयोगी थें ।

– पाबूजी को ''ऊँट रक्षक देवता'' कहा जाता हैं ।

(राजस्थान में सबसे पहले ऊँट लाने वाले पाबूजी थें ।)

– राईका/रैबारी/देवासी (ऊँट पालने वाली जाति) पाबूजी को अपना प्रमुख देवता मानते हैं ।

– पाबूजी को ''प्लेग रक्षक देवता'' भी कहा जाता हैं ।

– पाबजी ने 7 थोरी (जाति) भाइयों को शरण दी थी ।

– कोलूमण्ड (जोधपुर) में ''चैत्र अमवस्या'' (होली के 15 दिन बाद) को पाबूजी का मेला

– पाबूजी की फड ''सबसे लोकप्रिय फड हैं ।'' भील जाति के भोपे इसे गाते हैं (पाबूजी के पुजारी को बोलते हैं ।)

– फड को गाते समय ''रावणहत्या'' वाद्य यंत्र बजाते हैं ।

– पाबूजी के पवाडे (भजन) (किसी वीर पुरूष की याद में गाये जाने वाले)